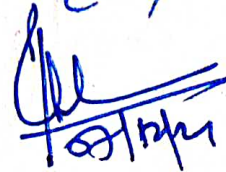


३/१२/२४

पत्रावली भोग प्रकाशक बापु
 के सेवा अभियान के लिए कोट
 कोशील के पत्र हूँ आबकता
 वाडी इपकिथा होकर विवेक
 किया है कि प्राची के सुकपद
 के अधिकारता लामवी सुन बा
 पुकी है प्राची लकावका कर्पों
 के लिए महका हो रहे है
 प्रिकरों प्राची का प्र. पत्र
 न्यायही के रूपीकार किया
 जात है न्यायोचित प्रती होना है
 इतर प्राची का प्र. पत्र रूपीकार
 किया जाकर सुम पाद लामव
 किसे जाते व पुगा नवर
 रूप करके के अडिवा प्रिय
 मति है पत्रावली प्रकाशक द्वारा
 होकर रूप नवर के का है
 तथा दारिद्र्य इतर है

माय
 7.12.2024


 सायन

